MODEL ANSWER

Q. What are non-tariff barriers in international trade? Discuss their impact on global trade and suggest measures to address them effectively.

Non-Tariff Barriers (NTBs) are trade restrictions that countries impose on goods and services, not through traditional tariffs but through various other mechanisms. These include sanitary standards, technical regulations, quotas, and customs procedures. While NTBs aim to ensure safety, quality, and environmental protection, they often function as obstacles to trade, particularly for developing nations like India.

Forms of NTBs and Their Impact

1. **Sanitary and Phytosanitary Measures (SPS):** These measures aim to protect human, animal, and plant life from risks associated with food safety and disease. However, they often serve as trade barriers. For instance, strict pesticide residue checks on Indian shrimp exports to the US lead to rejections even for minor non-compliance.
2. **Technical Barriers to Trade (TBT):** These barriers include regulations on product standards, labeling requirements, and environmental norms. For example, the EU's Carbon Border Adjustment Mechanism (CBAM) imposes a tax on carbon-intensive products like steel, affecting India's steel exports.
3. **Customs Procedures:** Complex customs procedures, including stringent rules of origin checks, can delay shipments and increase costs.
4. **Quotas:** These are limits on the quantity of goods that can be exported or imported. Japan's quota on tuna fish imports restricts the volume of seafood exports from India.

Impact on Global Trade

- **Increased Costs:** Compliance with NTBs often requires additional investments, such as upgrading production processes or meeting stringent product standards. This increases the cost of trade, making it difficult for small or developing countries to compete in the global market.
- **Market Access Restrictions:** NTBs can effectively shut out certain countries from international markets by making it too costly or complicated to meet regulatory standards.
- **Trade Distortion:** NTBs can distort global trade by creating non-tariff barriers that are more difficult to address through negotiation or policy reforms compared to traditional tariffs.
- **Inefficiency:** NTBs often reduce the overall efficiency of global supply chains by creating delays and disruptions in the movement of goods. These inefficiencies can lead to higher prices and less choice for consumers.

Measures to Address NTBs Effectively

1. **International Trade Agreements:** WTO agreements and regional pacts need to be strengthened in order to reduce NTBs and ensure transparency in trade regulations.
2. **Simplifying Procedures:** Countries should harmonize standards and streamline customs procedures to lower compliance costs and improve market access.
3. **Enhancing Transparency:** Governments and international bodies must ensure that NTBs are applied transparently, with accessible and clear trade regulations.
4. **Capacity Building for Developing Countries:** Providing technical assistance and facilitating technology can help these countries better comply with international standards and enhance their participation in global trade.
5. **Promote Cooperation Among Developing Nations:** Countries that are disproportionately affected by NTBs should collaborate to advocate for more favorable trade policies.

By focusing on these measures, the global community can ensure a more inclusive and efficient trading system, benefiting both developed and developing countries alike.

प्रश्न: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में गैर-टैरिफ बाधाएँ क्या हैं? वैश्विक व्यापार पर उनके प्रभाव पर चर्चा करें और उन्हें प्रभावी ढंग से संबोधित करने के उपाय सुझाएँ।

गैर-टैरिफ बाधाएं (एनटीबी) वे व्यापार प्रतिबंध हैं जो विभिन्न देश वस्तुओं और सेवाओं पर लगाते हैं, पारंपरिक टैरिफ के माध्यम से नहीं बल्कि विभिन्न अन्य तंत्रों के माध्यम से। इनमें स्वच्छता मानक, तकनीकी विनियम, कोटा और सीमा शुल्क प्रक्रियाएं शामिल हैं। जबकि एनटीबी का उद्देश्य सुरक्षा, गुणवत्ता और पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करना है, वे अक्सर व्यापार में बाधा के रूप में कार्य करते हैं, खासकर भारत जैसे विकासशील देशों के लिए।

एनटीबी के प्रकार और उनका प्रभाव

1. **सैनिटरी एंड फाइटोसैनिटरी उपाय:** इन उपायों का उद्देश्य खाद्य सुरक्षा और बीमारी से जुड़े जोखिमों से मानव, पशु और पौधों की रक्षा करना है। हालांकि, वे अक्सर व्यापार बाधाओं के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका को भारतीय झींगा निर्यात पर सख्त कीटनाशक अवशेष जांच के कारण मामूली गैर-अनुपालन के लिए भी अस्वीकृति हो जाती है।
2. **व्यापार के लिए तकनीकी बाधाएं:** इन बाधाओं में उत्पाद मानकों, लेबलिंग आवश्यकताओं और पर्यावरण मानदंडों पर विनियमन शामिल हैं। उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ का कार्बन सीमा समायोजन तंत्र स्टील जैसे कार्बन-गहन उत्पादों पर कर लगाता है, जिससे भारत के स्टील निर्यात प्रभावित होते हैं।
3. **सीमा शुल्क प्रक्रियाएँ:** मूल जाँच के कड़े नियमों सहित जटिल सीमा शुल्क प्रक्रियाएँ शिपमेंट में देरी कर सकती हैं और लागत को बढ़ा सकती हैं।
4. **कोटा:** ये उन वस्तुओं की मात्रा पर सीमाएँ हैं जिन्हें निर्यात या आयात किया जा सकता है। टूना मछली के आयात पर जापान का कोटा भारत से समुद्री खाद्य निर्यात की मात्रा को प्रभावित करता है।

वैश्विक व्यापार पर प्रभाव

- **लागत में बढ़ोतरी :** गैर-टैरिफ बाधाओं के अनुपालन के लिए अक्सर अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता होती है, जैसे उत्पादन प्रक्रियाओं को उन्नत करना या कड़े उत्पाद मानकों को पूरा करना। इससे व्यापार की लागत बढ़ जाती है, जिससे अल्प विकसित या विकासशील देशों के लिए वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल हो जाता है।
- **बाजार तक पहुंच पर प्रतिबंध:** गैर-टैरिफ बाधाएं कुछ देशों को विनियामक मानकों को पूरा करना बहुत महंगा या जटिल बनाकर अंतरराष्ट्रीय बाजारों से प्रभावी रूप से बाहर कर सकती हैं।
- **व्यापार में विकृति**: गैर-टैरिफ बाधाएं गैर-टैरिफ अवरोधों का निर्माण करके वैश्विक व्यापार को विकृत कर सकती हैं जिन्हें पारंपरिक टैरिफ की तुलना में संवाद या नीति सुधारों के माध्यम से संबोधित करना अत्यंत कठिन होता है।
- **अकुशलता:** गैर-टैरिफ बाधाएं अक्सर माल की आवाजाही में देरी और व्यवधान पैदा करके वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की समग्र दक्षता को प्रभावित करती हैं। इन अकुशलताओं के कारण कीमतें बढ़ सकती हैं और उपभोक्ताओं के लिए विकल्प कम हो सकते हैं।

गैर-टैरिफ बाधाओं को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के उपाय

1. **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौते:** गैर-टैरिफ बाधाओं को कम करने और व्यापार विनियमों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए डब्ल्यू.टी.ओ. समझौतों और क्षेत्रीय संगठनों को मजबूत करने की आवश्यकता है।
2. **प्रक्रियाओं को सरल बनाना:** देशों को मानकों में सामंजस्य स्थापित करना चाहिए और अनुपालन लागत को कम करने और बाजार पहुंच में सुधार करने के लिए सीमा शुल्क प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना चाहिए।
3. **पारदर्शिता बढ़ाना:** सरकारों एवं अंतर्राष्ट्रीय निकायों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गैर-टैरिफ बाधाओं को सुलभ और स्पष्ट व्यापार विनियमों के साथ पारदर्शी तरीके से लागू किया जाए।
4. **विकासशील देशों के लिए क्षमता निर्माण:** तकनीकी सहायता प्रदान करना और प्रौद्योगिकी को सुविधाजनक बनाना इन देशों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों का बेहतर ढंग से अनुपालन करने और वैश्विक व्यापार में अपनी भागीदारी बढ़ाने में मदद कर सकता है।
5. **विकासशील देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना:** गैर-टैरिफ बाधाओं से असमान रूप से प्रभावित देशों को अधिक अनुकूल व्यापार नीतियों की वकालत करने के लिए सहयोग करना चाहिए।

इन उपायों पर ध्यान केंद्रित करके, वैश्विक समुदाय एक अधिक समावेशी और कुशल व्यापार प्रणाली सुनिश्चित कर सकता है, जिससे विकसित और विकासशील दोनों देशों को लाभ होगा।

Samyak
An Institute For Civil Services